SHODHBODHALAYA (शोधबोधालय)
AN INTERNATIONAL, PEER REVIEWED, REFEREED, OPEN ACCESS JOURNAL
Impact Factor : 5.6, ISSN : 2584-1807
Vol. 1, Issue 3, April-June 2024
Online Available : http://shodhbodh.com/

स्वामी विवेकानन्द के युवाओं के लिए शैक्षिक विचार और आधुनिक शैक्षिक प्रणाली में इसके महत्व पर अध्ययन

डॉ0 कंचन जैन, शिक्षाशास्त्र विभाग, सनराइज विश्वविद्यालय

सार

शिक्षा की मूल परिभाषा 'मूल्यों का समूह' है। स्वामी विवेकानन्द कहते हैं, ''हम वह शिक्षा चाहते हैं जिससे मन का चरित्र बढ़े, बुद्धि का विस्तार हो और व्यक्ति अपने पैरों पर खड़ा हो सके।'' आज की शिक्षा एक तरह से हमें भौतिकवाद की ओर भटकाती है, जो लोगों को ऊंच–नीच में बांटती है, जबकि प्राचीन भारत की शिक्षा मानवता की एकता और सौहार्द स्थापित करती थी। हमारी वर्तमान शिक्षा का उद्देश्य केवल उच्च अंक प्राप्त करना है ताकि छात्र डॉक्टर, वकील, इंजीनियर या अन्य पेशेवर बन सकें। अधिकतर उद्देश्य अधिकतम धन कमाना होता है। शिक्षा का उद्देश्य मानवीय मूल्यों को आत्मसात करना नहीं है। इसलिए, हमारी शैक्षिक प्रणाली के ढांचे को नया स्वरूप देने के लिए, विशेष रूप से मानवीय मूल्यों से संबंधित मूल्य आधारित शिक्षा को फिर से शुरू करने की तत्काल आवश्यकता है। बच्चे का दिमाग मुलायम मिट्टी की तरह होता है और उसे किसी भी मनचाहे आकार में ढाला जा सकता है। इस प्रकार, मूल्य शिक्षा प्रदान करने का यह सही समय और उम्र है ताकि बच्चे के मन में बने सही प्रभाव जीवन भर उसका मार्गदर्शन करते रहें। ऐसा जीवन निश्चित रूप से नैतिक और न्यायपूर्ण सिद्धांतों पर आधारित होगा। विवेकानन्द के शैक्षिक विचारों को किसी व्यक्ति के चरित्र में प्रभावी ढंग से समाहित किया जा सकता है। स्वामी विवेकानन्द न केवल एक समाज सुधारक थे, बल्कि एक शिक्षक भी थे। आधुनिक भारत के जागरण में उनका योगदान अपने प्रकार और गुणवत्ता में आलोचनात्मक है। यदि शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन के सबसे शक्तिशाली साधन के रूप में देखा जाता है, तो शैक्षिक विचार में उनका योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने शिक्षा को 'मनुष्य में पहले से मौजूद पूर्णता की अभिव्यक्ति' कहकर अस्वीकार कर दिया।

SHODHBODHALAYA (शोधबोधालय)
AN INTERNATIONAL, PEER REVIEWED, REFEREED, OPEN ACCESS JOURNAL
Impact Factor : 5.6, ISSN : 2584-1807
Vol. 1, Issue 3, April-June 2024
Online Available : http://shodhbodh.com/

मुख्य शब्द: विवेकानन्द के शैक्षिक विचार, विवेकानन्द के अनुसार शिक्षा के उद्देश्य, आज की शिक्षा, विवेकानन्द के सुधार के विचार। वर्तमान समय की शिक्षा में विवेकानन्द के शैक्षिक विचारों का महत्व।

प्रस्तावना

आज भारत को मूल्यपरक शिक्षा की सख्त जरूरत है जो युवा छात्रों में उन मूल्यों को विकसित करे जिन्हें उन्हें अपने भीतर आत्मसात करने और विकसित करने की जरूरत है। स्वामी विवेकानन्द कहते हैं, ''हम वह शिक्षा चाहते हैं जिससे मन का चरित्र बढ़े, बुद्धि का विस्तार हो और व्यक्ति अपने पैरों पर खड़ा हो सके।'' वर्तमान परिदृश्य में जहांहम रहते हैं, समाज भौतिक लाभ और मुनाफे को सबसे ऊपर महत्व देता है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी के इस भौतिकवादी युग में यह कहा जाए तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। नैतिकता को छोड़कर बाकी सब कुछ अपने स्तर पर पहुँच गया है। अन्य पहलुओं के विपरीत मूल्य रसातल में चले गए हैं जहां मानव अस्तित्व और उसका भविष्य निराशाजनक और अंधेरे में दिखता है। यद्यपि प्रत्येक राष्ट्र मूल्यों के निरंतर क्षरण से चिंतित है, फिर भी मूल्यों की बहाली के लिए किसी भी राष्ट्र द्वारा कोई गंभीर कार्रवाई नहीं की गई है। यहां तक कि हमारी वर्तमान शिक्षा प्रणाली भी ज्ञान और कौशल देने की ओर उन्मुख है जो छात्रों को बिक्री योग्य उत्पाद बनाएगी और कुछ नहीं। यह शिक्षा प्रणाली हीन भावना को बढ़ा रही है। छात्र विषयों की अवधारणा और निहितार्थ को समझने के बजाय रट रहे हैं। किसी भी शिक्षा को तब तक राष्ट्रीय नहीं कहा जा सकता जब तक वह राष्ट्र के प्रति प्रेम, सीखने के प्रति प्रेम और राष्ट्र की प्राचीन संस्कृति, मूल्य, परंपरा और मूल्यवान ज्ञान का पोषण करने के लिए प्रेम को प्रेरित न करे। कार्यप्रणाली: इस पेपर में, शोध विभिन्न पुस्तकों, शोध रिपोर्टों, पत्रिकाओं और शोध पत्रों से लिए गए माध्यमिक डेटा पर आधारित था।

अध्ययन के उद्देश्य:

1. स्वामी विवेकानन्द के शैक्षिक विचारों और उनके अर्थों की पहचान करना।

SHODHBODHALAYA (शोधबोधालय)
AN INTERNATIONAL, PEER REVIEWED, REFEREED, OPEN ACCESS JOURNAL
Impact Factor : 5.6, ISSN : 2584-1807
Vol. 1, Issue 3, April-June 2024
Online Available : http://shodhbodh.com/

2. मानव जाति, विशेषकर छात्र समुदाय के लिए विवकानंद के शैक्षिक विचारों की आवश्यकता का पता लगाना।
3. विवेकानन्द के शैक्षिक विचार के उन कारकों का पता लगाना जो मूल्य–शिक्षा के निर्माण में सहायक होते हैं।

विवेकानन्द के शैक्षिक विचार

ऐसा कहा जाता है कि, एक गरीब शिक्षक बताता है, एक औसत शिक्षक समझाता है, एक अच्छा शिक्षक करके दिखाता है, एक महान शिक्षक प्रेरित करता है। विवेकानन्द एक महान शिक्षक होने के साथ–साथ एक महान शिक्षाशास्त्री भी थे। उनके अनुसार शिक्षा का उद्देश्य तथ्यों का नहीं बल्कि मूल्यों का ज्ञान है। मानव विकास के युगों से ही मानव शांति, समृद्धि, खुशी और परिपूर्णता की अनुभूति की उच्चतम स्थिति प्राप्त करने के लिए लगातार प्रयासरत रहा है। उन्होंने पूरे विश्व के सामने सच्चे भारत का परिचय दिया। वसुधैव कुटुंबकम की अवधारणा – दुनिया एक परिवार है – मानव समाज के अस्तित्व, विकास और वास्तविक प्रगति के लिए एकमात्र प्रकाशस्तंभ है, खासकर आज की संघर्षग्रस्त दुनिया में। स्वामी विवेकानन्द ने महसूस किया कि प्रत्येक व्यक्ति को, प्रत्येक राष्ट्र को महान बनाने के लिए तीन चीजें आवश्यक हैं:

1. अच्छाई की शक्तियों का दृढ़ विश्वासय
2. ईर्ष्या और संदेह का अभाव
3. उन सभी की मदद करना जो अच्छा बनने और अच्छा करने की कोशिश कर रहे हैं।

उनके अनुसार शिक्षा एक सतत प्रक्रिया हैय इसमें जीवन के भौतिक, भौतिक, बौद्धिक, भावनात्मक, नैतिक और आध्यात्मिक सभी पहलुओं को शामिल किया जाना चाहिए। आधुनिकीकरण के प्रति उनका दृष्टिकोण यह है कि कुछ भी करने से पहले जनता को शिक्षित किया जाना चाहिए। स्वामी विवेकानन्द का शैक्षिक दर्शन उनके सामान्य जीवन पर आधारित है। वे वेदान्ती शिक्षाविद् थे। उन्होंने अद्वैत वेदांत या गैर–द्वैतवाद में विश्वास का प्रतिपादन किया था। ईश्वर सर्वोच्च, अनंत, एक और निराकार है। वह अनंत अस्तित्व,

SHODHBODHALAYA (शोधबोधालय)
AN INTERNATIONAL, PEER REVIEWED, REFEREED,
OPEN ACCESS JOURNAL
Impact Factor : 5.6, ISSN : 2584-1807
Vol. 1, Issue 3, April-June 2024
Online Available : http://shodhbodh.com/

अनंत ज्ञान और अनंत आनंद है। मनुष्य सहित प्रत्येक जीवित प्राणी उच्च या शाश्वत स्व का एक हिस्सा है। 'राजयोग' में वे कहते हैं, ''प्रत्येक आत्मा संभावित रूप से दिव्य है।'' सभी मनुष्य ईश्वर की संतान हैं। उनके अनुसार मनुष्य में विश्वास पैदा करना होगा। यह आस्था प्रकृति में त्रिगुणात्मक है–स्वयं पर आस्था, राष्ट्र पर आस्था और ईश्वर पर आस्था। जीव–जंतुओं की सेवा से ईश्वर की प्राप्ति हो सकती है। जीवित प्राणियों के लिए भगवान की सेवा का मतलब है. वेदांत के इस सत्य को जीवन में धारण और संस्कारित करना होगा। इसे ''प्रैक्टिकल वेदांत' के रूप में जाना जाता है – जिसका सार मनुष्य में ईश्वर की सेवा है। विवेकानन्द एक उदार विचारक और शिक्षाविद् थे। वह मनुष्य और ईश्वर की आवश्यक एकता में विश्वास करते थे। उन्होंने भारतीय अध्यात्म और पश्चिमी भौतिकवाद को एक करने का प्रयास किया। उन्होंने परा विद्या (सर्वोच्च ज्ञान) और अपरा विद्या (भौतिक ज्ञान) को एक करने का भी प्रयास किया। विवेकानन्द ने वर्तमान शिक्षा प्रणाली की आलोचना की। विवेकानन्द ने इस बात की वकालत की कि 'मनुष्य–निर्माण की शिक्षा मनुष्य ही सर्वोच्च मंदिर है।' विवेकानन्द का मानना है कि ''शिक्षा मनुष्य में पहले से मौजूद पूर्णता की अभिव्यक्ति है।'' ''पूर्णता पहले से ही मनुष्य में अंतर्निहित है और शिक्षा उसी की अभिव्यक्ति है।'' ज्ञान व्यक्ति के भीतर ही निवास करता है। सारा ज्ञान – लौकिक या आध्यात्मिक – मानव मस्तिष्क में है। ज्ञान मनुष्य के अंदर निहित है, कोई भी ज्ञान बाहर से नहीं आता है, यह सब अंदर ही है। एक साधारण व्यक्ति अपने अंदर निहित ज्ञान को खोज लेता है। जब आवरण धीरे–धीरे हटता है तो सीखना होता है। मनुष्य को स्वयं की खोज करनी चाहिए। यह खोज आत्मा के विस्तार और संवर्धन में मदद करेगी। विद्यार्थी को स्वयं ही खोजना है, स्वयं ही सीखना है और स्वयं ही सिखाना है। इस प्रकार, विवेकानन्द के अनुसार, शिक्षा आंतरिक स्व की खोज है। विवेकानन्द के लिए शिक्षा किसी के मस्तिष्क में डाली गई जानकारी की वह मात्रा नहीं है, जो जीवन भर बिना पचे रह जाए। बल्कि यह विचारों का जीवन–निर्माण आत्मसातीकरण है। उनके अनुसार "यदि आपने पाँच विचारों को आत्मसात कर लिया है और उन्हें अपना चरित्र बना लिया है, तो आपके पास किसी भी

SHODHBODHALAYA (शोधबोधालय)
AN INTERNATIONAL, PEER REVIEWED, REFEREED,
OPEN ACCESS JOURNAL
Impact Factor : 5.6, ISSN : 2584-1807
Vol. 1, Issue 3, April-June 2024
Online Available : http://shodhbodh.com/

ऐसे व्यक्ति की तुलना में अधिक शिक्षा है जिसने पूरी लाइब्रेरी को कंठस्थ कर लिया है। यदि शिक्षा सूचना के समान होती, तो पुस्तकालय दुनिया के सबसे महान ऋषि होते और विश्वकोश सबसे महान ऋषि होते। विवेकानन्द शिक्षा को मानव जीवन का अंग मानते हैं। वास्तविक शिक्षा वह है जिससे व्यक्ति अपने पैरों पर खड़ा हो सके। स्वामीजी कहते हैं, ''सारी शिक्षा, सारे प्रशिक्षण का अंत मनुष्य–निर्माण होना चाहिए।'' आत्मविश्वास और आत्म–बोध का निर्माण भी शिक्षा का उद्देश्य होना चाहिए। शिक्षा को मनुष्य को अपनी छिपी हुई शक्तियों के प्रति सचेत करना चाहिए। स्वामीजी के स्वयं के शब्दों में: ''अपने आप में विश्वास और भगवान में विश्वास–यही महानता का रहस्य है।'' विवेकानन्द ने शिक्षा के माध्यम से चरित्र निर्माण पर बल दिया। वह कहते हैं, ''शिक्षा का अंत चरित्र–निर्माण है।'' सामान्यतः चरित्र को आत्मसम्मान की भावना माना जाता है। उनके अनुसार चरित्र मनुष्य की प्रवृत्तियों का समुच्चय है, उसके मन का योग है। अच्छे और बुरे विचार समान रूप से व्यक्ति के चरित्र का निर्माण करते हैं। शिक्षा का उद्देश्य हमारे मन की बुरी प्रवृत्तियों को दूर करना होना चाहिए। नैतिक एवं नैतिक शिक्षा इस संबंध में बहुत मदद कर सकती है। स्वामी जी ने एकीकृत व्यक्तित्व के विकास पर बल दिया। यह व्यक्तित्व के बौद्धिक, शारीरिक, सामाजिक, नैतिक, भावनात्मक और सौन्दर्यात्मक विकास जैसे समग्र या बहुपक्षीय विकास से ही संभव है। वह एक शंकर की बुद्धि और एक बुद्ध के हृदय को जोड़ना चाहते थे। उनके अनुसार "वास्तविक मनुष्य को बनाने में व्यक्तित्व दो–तिहाई तथा उसकी बुद्धि एवं शब्द केवल एक–तिहाई होते हैं।" स्वामी जी ने शिक्षा में शिक्षक के व्यक्तित्व पर बल दिया। सच्ची शिक्षा शिक्षक और शिष्य के बीच घनिष्ठ व्यक्तिगत संपर्क से ही संभव है। इस उद्देश्य से वह शिक्षा की पुरानी गुरुकुल प्रणाली को पुनर्जीवित करना चाहते थे। विवेकानन्द बालक को शिक्षा का केन्द्रबिन्दु मानते हैं। वह ज्ञान का भण्डार है। विवेकानन्द आंतरिक ज्ञान की खोज पर जोर देते हैं। जब तक भीतर की शिक्षा नहीं खुलती, तब तक बाहर की सारी शिक्षा व्यर्थ है।

SHODHBODHALAYA (शोधबोधालय)
AN INTERNATIONAL, PEER REVIEWED, REFEREED,
OPEN ACCESS JOURNAL
Impact Factor : 5.6, ISSN : 2584-1807
Vol. 1, Issue 3, April-June 2024
Online Available : http://shodhbodh.com/

1. पूर्णता तक पहुँचनाः शिक्षा का मुख्य उद्देश्य मनुष्य में पहले से मौजूद व्यापक पूर्णता को प्राप्त करना है। विवेकानन्द का मत था कि समस्त भौतिक एवं आध्यात्मिक ज्ञान अज्ञान के पर्दे से ढके हुए मनुष्य में पहले से ही विद्यमान है। शिक्षा को पर्दा हटाना चाहिए ताकि ज्ञान धीरे–धीरे सभी कोनों को रोशन करने के लिए एक रोशन मशाल के रूप में चमके।

2. स्वधर्म की पूर्ति : स्वामी विवेकानन्द के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति को अपने जैसा ही विकसित होना है। किसी को भी दूसरों की नकल नहीं करनी है. इसीलिए उन्होंने विदेशी शिक्षा थोपे जाने की निंदा की। उन्होंने पूछा, ''किसी विदेशी भाषा में दूसरों के विचारों को कंठस्थ करके और फिर उसे अपने दिमाग में भरकर और कुछ विश्वविद्यालय की डिग्री लेकर, आप अपने आप को शिक्षित होने पर गर्व कर सकते हैं। क्या यही शिक्षा है?" सच्चा सुधार स्वयं प्रेरित है। बच्चों पर किसी भी प्रकार का बाहरी दबाव नहीं होना चाहिए। इसलिए विवेकानंद ने सुझाव दिया, ''यदि आप किसी को शेर नहीं बनने देंगे, तो वह लोमड़ी बन जाएगा।''

3. आत्मविश्वास पैदा करनाः एक व्यक्ति के भीतर कई गुण हो सकते हैं, बिना इसके प्रति जागरूक हुए। शिक्षा का कार्य उसे इसके प्रति सचेत करना है। इस चेतना से वह किसी भी ऊंचाई तक पहुंच सकता है। "जागो, उठो और तब तक मत रुको जब तक कि तुम्हारे जीवन का लक्ष्य प्राप्त न हो जाए।" विवेकानन्द शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थी में यह भावना जगाना चाहते हैं।

4. विविधता में एकताः शिक्षा का असली उद्देश्य व्यक्तियों में अंतर्दृष्टि विकसित करना है ताकि वे विविधता में एकता की खोज और एहसास करने में सक्षम हो सकें। विवेकानन्द ने कहा कि भौतिक और आध्यात्मिक संसार एक हैंय उनकी विशिष्टता एक भ्रम है. शिक्षा को इस भावना को विकसित करने में सक्षम होना चाहिए जो विविधता में एकता ढूंढती है।

5. चरित्र निर्माणः चरित्र मनुष्य की प्रवृत्तियों का समुच्चय है, उसके मन की प्रवृत्ति का योग है। हम वही हैं जो हमें हमारे विचारों ने बनाया है। इसलिए, शिक्षा का उद्देश्य हमारे मन की बुरी प्रवृत्तियों को दूर करना होना चाहिए। स्वामीजी ने कहा, ''हम वह शिक्षा चाहते हैं,

SHODHBODHALAYA (शोधबोधालय)
AN INTERNATIONAL, PEER REVIEWED, REFEREED,
OPEN ACCESS JOURNAL
Impact Factor : 5.6, ISSN : 2584-1807
Vol. 1, Issue 3, April-June 2024
Online Available : http://shodhbodh.com/

जिससे चरित्र का निर्माण हो, मन की शक्ति बढ़े, बुद्धि का विस्तार हो और जिससे मनुष्य अपने पैरों पर खड़ा हो सके।''

6. शारीरिक और मानसिक विकासः शिक्षा का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य बच्चे का शारीरिक और मानसिक विकास करना है ताकि बच्चा अपनी शिक्षा पूरी करने के बाद एक निडर और शारीरिक रूप से विकसित नागरिक के रूप में राष्ट्रीय विकास और उन्नति को बढ़ावा देने में सक्षम हो सके। कल का. स्वामीजी ने बच्चे के मानसिक विकास पर जोर देते हुए कामना की कि शिक्षा से बच्चा दूसरों के लिए परजीवी बनने के बजाय आर्थिक रूप से अपने पैरों पर खड़ा हो सके।

7. नैतिक और आध्यात्मिक विकासः स्वामीजी के अनुसार, किसी राष्ट्र की महानता न केवल उसकी संसदीय संस्थाओं और गतिविधियों से मापी जाती है, बल्कि उसके नागरिकों की महानता से भी मापी जाती है। लेकिन नागरिकों की महानता उनके नैतिक और आध्यात्मिक विकास से ही संभव है जिसे शिक्षा को बढ़ावा देना चाहिए।

8. धार्मिक विकास : स्वामीजी के अनुसार धार्मिक विकास शिक्षा का अनिवार्य उद्देश्य है। उनके अनुसार, प्रत्येक व्यक्ति को अपने अंदर सन्निहित धार्मिक बीज को खोजने और विकसित करने में सक्षम होना चाहिए और इससे पूर्णता का पता लगाने में मदद मिलेगी। सत्य या वास्तविकता. इसलिए उन्होंने भावनाओं और भावनाओं के प्रशिक्षण की वकालत की ताकि पूरा जीवन शुद्ध और उदात्त हो जाए। तभी व्यक्ति में आज्ञाकारिता, समाज सेवा, महान संतों की शिक्षाओं और उपदेशों के प्रति समर्पण और विभिन्न अन्य अच्छे गुणों की क्षमता विकसित होगी। 9. सार्वभौमिक भाईचारे को बढ़ावाः स्वामी विवेकानन्द का मानव जाति के प्रति प्रेम कोई भौगोलिक सीमा नहीं जानता था। उन्होंने हमेशा सभी देशों के बीच सद्भाव और अच्छे संबंधों की वकालत की। उन्होंने कहा, "शिक्षा के माध्यम से हमें धीरे–धीरे अलगाव और असमानता की दीवारों को गिराकर सार्वभौमिक भाईचारे के विचार तक पहुंचना चाहिए। प्रत्येक मनुष्य में, प्रत्येक जानवर में, चाहे वह कितना भी कमजोर या

SHODHBODHALAYA (शोधबोधालय)
AN INTERNATIONAL, PEER REVIEWED, REFEREED,
OPEN ACCESS JOURNAL
Impact Factor : 5.6, ISSN : 2584-1807
Vol. 1, Issue 3, April-June 2024
Online Available : http://shodhbodh.com/

दुखी, बड़ा या छोटा, एक ही सर्वव्यापी और सर्वज्ञ आत्मा का निवास है। अंतर आत्मा में नहीं, अभिव्यक्ति में है।"

आज की शिक्षाः

आज दुनिया कई तरफ से भारी संकट से जूझ रही है। अपराध, संघर्ष, एक समुदाय और दूसरे समुदाय के बीच नफरत और अविश्वास, भूख, बेरोजगारी, गरीबी और साक्षरता, संसाधनों की कमी और पर्यावरण का प्रदूषण, वनों की कटाई और मरुस्थलीकरण, प्रवासियों और शरणार्थियों की बढ़ती संख्या, जातीय और उप–राष्ट्रीय हिंसा, आतंकवाद, नशीली दवाओं तस्करी, एड्स आदि, ये सभी मिलकर शांति के लिए गंभीर खतरा बनते हैं। आज का संकट विवेकानन्द के समय आये संकट से भी बड़ा है। दुनिया अब हिंसा से भरी है. आज की शिक्षा एक तरह से हमें भौतिकवाद की ओर भटकाती है, जो लोगों को ऊंच–नीच में बांटती है, जबकि प्राचीन भारत की शिक्षा मानवता की एकता और सौहार्द स्थापित करती थी। वर्तमान आधुनिक भौतिकवादी समाज में मूल्यों का कोई उचित स्थान नहीं है। हमारी आधुनिक राजनीतिक व्यवस्था पार्टी और वोट प्रतिशत पर आधारित है न कि नैतिकता पर आधारित। हमारी आर्थिक नीति उत्पादन केन्द्रित और लाभ आधारित है, मानव केन्द्रित नहीं। हमारे आधुनिक अर्थशास्त्र और नैतिकता के बीच कोई संबंध नहीं है। हमारी सामाजिक व्यवस्था साम्प्रदायिक एवं जातीय झगड़ों से भरी पड़ी है। आजकल सामाजिक अन्याय एक स्वीकार्य घटना बन गई है। हमारी न्यायिक प्रणाली में, ''सभी समान हैं लेकिन कुछ और समान हैं''। अन्य व्यवस्थाओं की तरह हमारी शिक्षा व्यवस्था भी नैतिकता और मूल्यों से भटकी हुई है। हमारी शिक्षा का लक्ष्य चरित्र निर्माण से बदलकर अंक प्राप्त करना हो गया है। हमारी शिक्षा अकार्यात्मक एवं प्रेरणाहीन है। सामान्य तौर पर हमारी शिक्षा पूर्ण जीवन के लिए पूर्वसर्ग बनने से कोसों दूर है। हमारे पास स्वतंत्रता और पहल की बहुत कम गुंजाइश है। शिक्षा का उद्देश्य केवल छात्रों को व्यावसायिक कॉलेजों में प्रवेश दिलाना है। उन्हें केवल उनके विषयों की शिक्षा दी जाती है, वास्तविक मूल्यों की नहीं। शिक्षा पर स्वामी विवेकानन्द के कुछ उद्धरणः

SHODHBODHALAYA (शोधबोधालय)
AN INTERNATIONAL, PEER REVIEWED, REFEREED, OPEN ACCESS JOURNAL
Impact Factor : 5.6, ISSN : 2584-1807
Vol. 1, Issue 3, April-June 2024
Online Available : http://shodhbodh.com/

1. दुनिया की सारी दौलत एक छोटे से भारतीय गांव की मदद नहीं कर सकती, अगर लोगों को खुद की मदद करना नहीं सिखाया जाए। हमारा कार्य मुख्य रूप से शैक्षिक, नैतिक और बौद्धिक दोनों होना चाहिए।

2. जनता को शिक्षित करें और बढ़ाएं, तभी एक राष्ट्र संभव है।

3. शिक्षा अभी तक दुनिया में नहीं आई है और सभ्यता – सभ्यता अभी तक कहीं भी शुरू नहीं हुई है।

4. शिक्षा का मतलब दिमाग को बहुत सारे तथ्यों से न भरना है। साधन को पूर्ण करना और अपने मन पर पूर्ण अधिकार प्राप्त करना खशिक्षा का आदर्श है।

5. शिक्षा मनुष्य में पहले से मौजूद पूर्णता की अभिव्यक्ति है।

6. शिक्षा के प्रसार, ज्ञान के उदय के बिना देश की प्रगति कैसे हो सकती है?

7. यदि शिक्षा सूचना के समान है, तो पुस्तकालय दुनिया के सबसे महान ऋषि हैं, और विश्वकोश ऋषि हैं।

8. यदि पहाड़ मोहम्मद के पास नहीं आता है, तो मोहम्मद को पहाड़ पर जाना होगा।

9. यदि गरीब लड़का शिक्षा प्राप्त नहीं कर सकता, तो शिक्षा उसके पास अवश्य जानी चाहिए।

10. जाति को समतल करने का एकमात्र तरीका उस संस्कृति, शिक्षा को अपनाना है जो उच्च जातियों की ताकत है। 11. सम्पूर्ण जीवन का एक ही उद्देश्य है – शिक्षा। अन्यथा स्त्री–पुरुष, भूमि–सम्पत्ति का क्या प्रयोजन?

12. हम वह शिक्षा चाहते हैं जिससे चरित्र का निर्माण हो, मन की शक्ति बढ़े, बुद्धि का विस्तार हो और जिससे व्यक्ति अपने पैरों पर खड़ा हो सके।

13. आप एक पौधे को उगाने से ज्यादा किसी बच्चे को नहीं सिखा सकते। आप जो कुछ भी कर सकते हैं वह नकारात्मक पक्ष पर हैकृआप केवल मदद ही कर सकते हैं। यह भीतर से एक अभिव्यक्ति हैय यह अपना स्वभाव विकसित कर लेता हैकृआप केवल रुकावटें दूर कर सकते हैं।

SHODHBODHALAYA (शोधबोधालय)
AN INTERNATIONAL, PEER REVIEWED, REFEREED, OPEN ACCESS JOURNAL
Impact Factor : 5.6, ISSN : 2584-1807
Vol. 1, Issue 3, April-June 2024
Online Available : http://shodhbodh.com/

15. अब और मत रोओ, बल्कि अपने पैरों पर खड़े हो जाओ और मनुष्य बनो। यह एक मनुष्य निर्मित धर्म है जो हम चाहते हैं। यह मानव–निर्माण सिद्धांत हैं जो हम चाहते हैं। हम सर्वांगीण मनुष्य–निर्माण वाली शिक्षा चाहते हैं।

16. इतनी तपस्या के बाद मुझे यह बात समझ में आ गई है कि भगवान हर जीव में मौजूद हैं, उनके अलावा कोई दूसरा भगवान नहीं है। 'जो जीव की सेवा करता है, वह वास्तव में भगवान की सेवा करता है।'

17. अच्छे इरादे, ईमानदारी और असीम प्यार से दुनिया को जीता जा सकता है। इन गुणों से युक्त एक आत्मा लाखों पाखंडियों और जानवरों के काले मंसूबों को नष्ट कर सकती है।

18. हर चुनौती में अवसर छिपा होता है, यदि आप अपने दिमाग को सही ढंग से निर्देशित करते हैं तो आप हमेशा विजयी रहेंगे।

19. आपके पास अपना जीवन बनाने या नष्ट करने की शक्ति है। आज से किसी को दोष न दें और अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए अपने दिमाग को निर्देशित करें।

20. सत्य, पवित्रता और निःस्वार्थता, जब भी ये मौजूद होते हैं, तो इनके स्वामी को कुचलने के लिए सूर्य के नीचे या ऊपर कोई शक्ति नहीं होती है। इनसे सुसज्जित होकर, एक व्यक्ति विरोध में पूरे ब्रह्मांड का सामना करने में सक्षम है।

21. जब तक आप स्वयं पर विश्वास नहीं करते तब तक आप ईश्वर पर विश्वास नहीं कर सकते।

22. आपको अंदर से बाहर तक बढ़ना होगा। कोई तुम्हें सिखा नहीं सकता, कोई तुम्हें आध्यात्मिक नहीं बना सकता।

23. अकेले वही जीते हैं, जो दूसरों के लिए जीते हैं।

24. आराम सत्य की परीक्षा नहीं है. सत्य अक्सर सहज होने से कोसों दूर होता है।

25. कुछ न मांगोय बदले में कुछ नहीं चाहिए. तुम्हें जो देना है दे दोय यह आपके पास वापस आ जाएगा, लेकिन अभी उसके बारे में मत सोचो।

SHODHBODHALAYA (शोधबोधालय)
AN INTERNATIONAL, PEER REVIEWED, REFEREED,
OPEN ACCESS JOURNAL
Impact Factor : 5.6, ISSN : 2584-1807
Vol. 1, Issue 3, April-June 2024
Online Available : http://shodhbodh.com/

26. एक समय में एक ही काम करो, और ऐसा करते समय बाकी सब को छोड़कर अपनी पूरी आत्मा उसमें डाल दो।

विवेकानन्द के युवाओं के लिए सुधार के विचार

विवेकानन्द के सुधार की विशिष्टता यह है कि उन्होंने संन्यासी के आन्तरिक अर्थ को समझा। व्यावहारिक रूप से संन्यासी का अर्थ है समर्पित व्यक्ति जिसका लक्ष्य आत्म–साक्षात्कार या ईश्वर–प्राप्ति है। स्वामीजी ने स्वयं को समाज के लिए समर्पित कर दियाय उनका उद्देश्य लोगों की सेवा करना था। उनके भगवान आम लोगों के दुःख में विद्यमान थे। विवेकानन्द की सुधार की अवधारणा और उसकी पद्धति नवीन है। उनके अनुसार सुधार रचनात्मक हैय यह एक 'विकास' है। वह किसी भी तरह के विनाश में विश्वास नहीं रखते. उसे सुधार के गुण का एहसास होता है। उसे धैर्यवान, सहानुभूतिपूर्ण और आशावान होना चाहिए। वह निर्माण और विनाश के बीच स्पष्ट रूप से भेदभाव करता है। यदि सुधार हिंसक प्रतिक्रिया के बाद होता है, तो यह केवल चीज की सतह को प्रभावित कर सकता है। शायद कुछ समय के लिए कुछ लाभ प्राप्त हो जाएय लेकिन अंततः बुराई और दुर्व्यवहार को दूर नहीं किया जा सकता। यही विचार उन्होंने अपने लेख 'माई प्लान ऑफ कैम्पेन' में व्यक्त किया है। वहां वह कहते हैं कि मनुष्य को वस्तु के मूल तक, उसकी जड़ तक जाना चाहिएय इसे ही वे 'आमूलचूल सुधार' कहते हैं। वह फिर कहते हैं कि समस्याओं का समाधान इतना आसान नहीं है, समस्या बड़ी और व्यापक है। हमें जल्दबाजी नहीं करनी चाहिए. सृजन और निर्माण की प्रक्रिया प्राकृतिक विकास में विकसित होती है और समय इस प्राकृतिक विकास का समाधान है।

वर्तमान शिक्षा में विवेकानन्द के शैक्षिक विचार

प्रौद्योगिकी के कारण दुनिया एक वैश्विक गांव बन रही है, इसलिए यह महत्वपूर्ण है कि छात्र विभिन्न देशों, नस्लों और धर्मों के लोगों से अच्छी तरह से जुड़ सकें। एक साथ रहना और सार्वभौमिक भाईचारे के साथ रहना सीखने पर स्वामी विवेकानन्द के विचारों की सूक्ष्म समझ हासिल करने की अधिक आवश्यकता है। शिक्षकों और भावी शिक्षकों के बीच

SHODHBODHALAYA (शोधबोधालय)
AN INTERNATIONAL, PEER REVIEWED, REFEREED,
OPEN ACCESS JOURNAL
Impact Factor : 5.6, ISSN : 2584-1807
Vol. 1, Issue 3, April-June 2024
Online Available : http://shodhbodh.com/

उनके विचारों और विचारों के बारे में व्यापक जागरूकता विशेष रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि उन पर युवाओं को शिक्षित करने की जिम्मेदारी है। सभी शिक्षकों एवं शिक्षाविदों को इस पर चिंतन करना चाहिए। खुद को पढ़ाना और खुद से पूछना, ''क्या मैं अपने छात्रों को सिखा रहा हूं कि कैसे सीखना है? मैं अपने छात्रों को कौन से कौशल दे रहा हूं जो उन्हें नई परिस्थितियों को अनुकूलित करने में मदद करेंगे? मैं अपने विद्यार्थियों को दूसरों से सफलतापूर्वक जुड़ने के क्या अवसर दे रहा हूँ? मैं अपने विद्यार्थियों को उचित चिंतन के बाद बुद्धिमानीपूर्ण विकल्प चुनने में सक्षम बनाने के लिए उन्हें क्या मार्गदर्शन दे रहा हूँ? इस समय स्वामी विवेकानन्द द्वारा दी गई शिक्षा की अवधारणा पहले से कहीं अधिक महत्वपूर्ण प्रतीत होती है। यदि हम अपने विद्यार्थियों को उचित संस्कार देकर मजबूत करेंगे तो निश्चित रूप से हमारा समाज मजबूत होगा। इसलिए हमारे आधुनिक समाज में मूल्य शिक्षा की अत्यधिक आवश्यकता है क्योंकि हमारा जीवन अधिक दयनीय हो गया है। शिक्षा की मात्रा तो काफी बढ़ गई है, लेकिन गुणवत्ता कम हो गई है। विवेकानन्द के शैक्षिक विचार आज बहुत महत्वपूर्ण हैं, जो वेदांत पर आधारित हैं और वे हिंदू समाज के एकमात्र भिक्षु हैं जिन्हें एहसास है कि अगर लोग वेदांत को अपने व्यावहारिक जीवन में लागू करें तो समाज बदल सकता है। विवेकानन्द ने वेदांत को व्यवहार में बदला। उन्होंने वेदांत को सरल बनाया ताकि एक सामान्य व्यक्ति भी दैनिक जीवन में वेदांत की शर्तों को आसानी से पहचान सके और उनसे जुड़ सके। उनके अनुसार मनुष्य पशुता, मानवता और देवत्व का मिश्रण है। शिक्षा का उद्देश्य आत्म प्रयास, आत्मबोध और उचित प्रशिक्षण के माध्यम से उसे पशु से दैवीय अवस्था तक बढ़ने में मदद करना होना चाहिए। यदि आधुनिक भारत किसी भी क्षेत्र में विफल रहा है, तो वह निस्संदेह एक आदर्श शिक्षा प्रणाली के माध्यम से विकसित समाज के प्रमुख घटक, वास्तविक इंसानों के निर्माण के क्षेत्र में है। आज हम इक्कीसवीं सदी में जी रहे हैं। यह आविष्कारों और नवप्रवर्तनों का युग है। स्वामीजी के शैक्षिक चिंतन का आज बहुत महत्व है क्योंकि आधुनिक शिक्षा का मानव जीवन के मूल्यों से बहुत अधिक संबंध समाप्त हो गया है। इसलिए, उन्होंने सुझाव दिया कि शिक्षा मस्तिष्क

SHODHBODHALAYA (शोधबोधालय)
AN INTERNATIONAL, PEER REVIEWED, REFEREED,
OPEN ACCESS JOURNAL
Impact Factor : 5.6, ISSN : 2584-1807
Vol. 1, Issue 3, April-June 2024
Online Available : http://shodhbodh.com/

में कुछ तथ्य ढूंसने के लिए नहीं होनी चाहिए, बल्कि इसका उद्देश्य मानव मस्तिष्क को सुधारना होना चाहिए। उनके लिए सच्ची शिक्षा कैरियर के लिए नहीं, बल्कि राष्ट्र के लिए योगदान के लिए थी। वह अब नहीं हैं लेकिन उन्हें इस ब्रह्मांड में हमेशा याद किया जाएगा। उनके मिशन और उनके उपदेश आने वाली पीढ़ियों को प्रेरणा देते रहेंगे।

निष्कर्ष

हमारे इतिहास और पौराणिक कथाओं ने हमें उत्कृष्ट मूल्य शिक्षा सिखाई है। लेकिन मूल्यपरक शिक्षा प्रदान करने का महत्व आज आवश्यक महसूस किया जा रहा है क्योंकि वर्तमान शिक्षा प्रणाली व्यक्तिगत और सामाजिक विकास में अधिक योगदान नहीं दे सकती है। निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि विवेकानन्द ने पूर्वाभास कर लिया था कि मानव जाति संकट से गुजर रही है। आदर्शों, आचरणों और आदतों का टकराव वातावरण में व्याप्त हो रहा है। हर पुरानी चीज का अनादर करना आजकल का फैशन है। कई साल बीत जाएंगे, कई पीढ़ियां आएंगी और जाएंगी, विवेकानन्द और उनका समय सुदूर अतीत बन जाएगा, लेकिन उस व्यक्ति की स्मृति कभी धुंधली नहीं होगी जिसने अपना पूरा जीवन लोगों के लिए बेहतर भविष्य का सपना देखा, जिसने इसके लिए बहुत कुछ किया अपने हमवतन लोगों को जगाएं और भारत को आगे बढ़ाएं, ताकि अपने बहुत पीड़ित लोगों को अन्याय और क्रूरता से बचा सकें। विवेकानन्द के शिक्षा संबंधी विचारों के विश्लेषण से यह स्पष्ट है कि उचित शिक्षा से ही जनसामान्य का उत्थान संभव है।

विवेकानन्द एक महान शिक्षाविद् थे और उन्होंने शिक्षा के लगभग पूरे क्षेत्र में क्रान्ति ला दी। उनके शैक्षिक विचार वेदांत के शाश्वत सत्य से अत्यधिक प्रभावित थे। उन्होंने शिक्षा के अपने क्रांतिकारी विचारों से लाखों भारतीय युवाओं को प्रेरित किया। उन्होंने राष्ट्रीय रक्त में एक नये जोश का संचार किया। उन्होंने राष्ट्रीय तर्ज पर और राष्ट्रीय सांस्कृतिक परंपरा पर आधारित राष्ट्रीय शिक्षा की पुरजोर वकालत की। शिक्षा के प्रति विवेकानन्द का व्यावहारिक–उन्मुख दृष्टिकोण विज्ञान और कंप्यूटर विज्ञान, प्रौद्योगिकी और सूचना प्रौद्योगिकी के आधुनिक युग के लिए अत्यधिक उपयुक्त है।

SHODHBODHALAYA (शोधबोधालय)
AN INTERNATIONAL, PEER REVIEWED, REFEREED, OPEN ACCESS JOURNAL
Impact Factor : 5.6, ISSN : 2584-1807
Vol. 1, Issue 3, April-June 2024
Online Available : http://shodhbodh.com/

सन्दर्भ–

- उन्नीथन, टी.के.एन. (ईडी–), शिक्षा के माध्यम से मानवीय मूल्य, अहमदाबादः गुजरात विद्यापीठ, प्रथम संस्करण, नवंबर–2005।
- प्रो. प्रसाद कृष्णा, मूल्यों में शिक्षा– मूल्य शिक्षा के लिए रणनीतियाँ और चुनौतियाँ।
- डॉ. नीना अनेजा। प्रिंसिपल, ए.एस.कॉलेज ऑफ एजुकेशन, खन्ना, (पंजाब), भारत वर्तमान शिक्षा प्रणाली में मूल्य शिक्षा का महत्व और शिक्षक की भूमिका। शोध पत्र।
- जोवन क्रिस्टो, स्कूलों में मूल्यों का महत्वः चरित्र शिक्षा को लागू करना, विनोना स्टेट यूनिवर्सिटी– रोचेस्टर सेंटर।
- स्वामी विवेकानन्द – स्वामी निखिलानंद द्वारा लिखित एक जीवनी यहां उपलब्ध हैः .पद .स्वामी विवेकानन्द की संपूर्ण रचनाएँ, 9 खंडों में ीजजचःध्ध्बूअ.इमसनतउंजी. वतहध्10 पर।रामचंद्र गुहा, मेकर्स ऑफ मॉडर्न इंडिया, पेंगुइन, नई दिल्ली, 2010,
- स्वामी विवेकानन्द की शिक्षाएँ और उद्धरण।
- राजपूत, जे.एस. (2011). ''भारतीय युवाओं के लिए नैतिक मूल्यों की आवश्यकता'', रामकृष्ण मिशन संस्कृति संस्थान, 26ध्01ध्2012 को उद्धृत,
- अनुपमानंद, स्वामी (2013) स्वामी विवेकानंद और मूल्य शिक्षा, माइलस्टोन एजुकेशन रिव्यू, वर्ष 04, नंबर 1, अप्रैल 2013,
- डॉ. चिन्मय कुमार घोष, शिक्षा पर उनके विचारों के संदर्भ में 21वीं सदी में स्वामी विवेकानन्द की प्रासंगिकता। निदेशक,दूरस्थ शिक्षा, इग्नू।
- प्रो. एस पी चौबे, डॉ. अखिलेश चौबे, एजुकेशनल आइडियल्स ऑफ द ग्रेट इन इंडिया, नीलकमल पब्लिकेशंस प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, 2013।
- प्रदीप कुमार सेनगुप्ता, स्वामी विवकानंद का दर्शन, प्रोग्रेसिव पब्लिशर्स. कोलकाता–73.
- बिस्वा रंजन पुरकैत, महान शिक्षक और उनके दर्शन, न्यू सेंट्रल बुक एजेंसी (पी) लिमिटेड। कोलकाता, दूसरा संस्करण।